



Original Article

ताली : अनसुने दर्द की कहानी

डॉ. युवराज माने

सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग

श्री. रावसाहेब रामराव पाटील महाविद्यालय, सावलज.

Manuscript ID:

IJAAR-C130335

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 173 - 176

Submitted: 27 Jan. 2026

Revised: 02 Feb. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. युवराज माने

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785896

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785896>



Creative Commons



सार:

ताली की कथा एक व्यक्ति के जीवन-संघर्ष से प्रारंभ होकर पूरे समुदाय की आवाज़ बन जाती है। इसमें बचपन से लेकर वयस्कता तक की वह यात्रा दिखाई देती है, जहाँ पहचान का संकट, पारिवारिक अस्वीकृति और सामाजिक बहिष्कार गहरे घाव छोड़ते हैं। परिवार, जिसे सुरक्षा और अपनत्व का केंद्र माना जाता है, वही जब अस्वीकार करता है तो व्यक्ति का अस्तित्व ही प्रश्नों के घेरे में आ जाता है। श्रृंखला इस पीड़ा को अत्यंत संवेदनशील ढंग से चित्रित करती है। यह दर्शाती है कि किन्नर होना केवल जैविक या शारीरिक भिन्नता नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टि का परिणाम भी है। इस वेब सीरीज का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह किन्नर समुदाय के भीतर मौजूद सामूहिकता और पारिवारिक संरचना को भी उजागर करती है।

मुख्य शब्द: हाशिए का समाज, किन्नर, आत्मसम्मान, अधिकार, स्वतंत्रता ।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. युवराज माने. (2026). ताली : अनसुने दर्द की कहानी. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 173 - 176. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785896>

प्रस्तावना:

मानव समाजशील प्राणी है। मनुष्य से ही समाज का निर्माण होता है, पर इसी समाज में जब की किसी मनुष्य के साथ प्राणियों जैसा व्यवहार किया जाता है, तो वहाँ मानवता दम तोड़ देती है। दलित या समलिंगी लोगों को समाज मानव तो

मानता है, लेकिन किन्नर को न समान मनुष्य मानता है, न संविधान मनुष्य मानता था। आज संविधान ने उसे तृतीय लिंग के रूप में स्वीकार किया है, पर क्या समाज उसे मनुष्य के रूप में देखा है? क्या समाज में उसे वह स्थान उसे आज प्राप्त है? वेब सीरीज ताली भारतीय ओटीटी माध्यमों में किन्नर/ट्रांसजेंडर



समुदाय के जीवन को केंद्र में रखकर निर्मित एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील रचना है। यह वेब सीरीज केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज की उन परतों को उघाड़ती है जिन्हें लंबे समय तक अनदेखा किया गया। ताली का मूल स्वर मानवीय गरिमा, पहचान और अधिकारों की तलाश से जुड़ा हुआ है। यह वेब सीरीज दर्शक को भावनात्मक रूप से झकझोरते हुए उसे सामाजिक आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती है।

साहित्य समाज का दर्पण है, तो सिनेमा समाज का प्रतिबिम्ब है। हिंदी सिनेमा ने वर्ष 2025 में अपनी स्थापना के 112 वर्ष पूरे कर लिए। 3 मई 1913 को दादा साहब फाल्केजी ने अपनी पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' के माध्यम से भारत में सिनेमा जगत की सुरवात की, इस तरह वर्ष 2012 सिनेमा की एक सदी के अंत का वर्ष रहा। 21वीं सदी का सिनेमा जितने तीव्र बदलावों से गुजरा है, इन बीते पन्द्रह-बीस वर्षों में उतना संभवतः विगत 100 वर्षों में नहीं देखा गया होगा। साहित्य में किन्नर को स्थान देने का महत्वपूर्ण कार्य महेंद्र भीष्म, नीरजा माधव, अनुसया त्यागी, प्रदीप सौरभ, निर्मला भुराडिया, चित्रा मुगदल, लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, भगवंत अनमोल, सुभाष अखिल आदि साहित्यकारों ने किया है। साहित्य के साथ फिल्मों में भी किन्नरों को धीरे-धीरे स्थान मिलता गया। 'सडक', 'तमन्ना', 'सबनम मौसी', 'वेलकम तो सज्जनपुर', 'Queens! Destiny of Dance', 'लक्ष्मी', 'सुपर डीलक्स' मराठी फिल्म 'जोगवा' आदि फिल्मों में किन्नर को केंद्र में रखकर समाज में उनके स्थान को दर्शाया है।

ताली : अनसुने दर्द की कहानी:

भारतीय समाज में किन्नर समुदाय की स्थिति ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रही है। किन्नर शब्द के बारे में

वेद, पुराण, महाभारत, रामायण, मध्यकाल और आधुनिक काल में संदर्भ मिलते हैं। इन्हें 'हिजड़ा', मौसी, पवैया जोगता, जोगता, उभयलिंगी, तृतीयपंथी, युनक, मौगा, खोजक खुसरा, जनखा, अनरावनी, बृहन्नला, छक्का, मेहला, नपुंसकलिंग, थर्ड जेंडर जैसे नामों से जाना जाता है। हिंदी साहित्य में किन्नर जीवन इस शोधालेख में डॉ. कल्पना गवली लिखती हैं कि, 'हिजड़ा उर्दू भाषा का शब्द है, जो अरबी के 'हिज्र' शब्द से लिया गया है। इसका अर्थ अपने कुनबे को छोड़ना है। यानी घर-परिवार, समाज से अलग होना, अलग रहना है।' किन्नरों को समाज में सामान्य मनुष्य की तरह स्थान नहीं है। परंपरागत सामाजिक संरचनाओं में उन्हें न तो पूर्ण रूप से स्वीकार किया गया और न ही समान अधिकार प्रदान किए गए। मुख्यधारा के सिनेमा और टेलीविजन में भी किन्नर पात्रों को अक्सर हास्य, भय या विचित्रता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया। ऐसे में ताली का आगमन एक वैचारिक हस्तक्षेप के रूप में देखा जा सकता है। गौरी सावंत जो इस वेब सीरीज की नायिका है। पहले वह गणेश सावंत था, लिंग परिवर्तन के कारण वह गौरी सावंत बनकर समाज में स्थित किन्नरों के लिए लड़ती रही। यह वेब सीरीज किन्नर समुदाय को केवल सहानुभूति का पात्र नहीं बनाती, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले सक्रिय सामाजिक व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत करती है। गौरी समाज के साथ-साथ कानून से भी लड़ती है, कीनन को समझ में स्थान देने के लिए गौरी की दो जहां चल रही है उस समाज उसका दुश्मन बने ही पर जिसके लिए वह लड़ रही है वह भी उन उसकी जान का दुश्मन बन चुकी है। ओ मुन्ना से कहती है- "तुझे क्या लगा रे हमारी लड़ाई सिर्फ बाहर की दुनिया से? सफाई पहले अंदर से करनी पड़ेगी रे पगले"।²

ताली की कथा एक व्यक्ति के जीवन-संघर्ष से प्रारंभ होकर पूरे समुदाय की आवाज़ बन जाती है। इसमें बचपन से



लेकर वयस्कता तक की वह यात्रा दिखाई देती है, जहाँ पहचान का संकट, पारिवारिक अस्वीकृति और सामाजिक बहिष्कार गहरे घाव छोड़ते हैं। परिवार, जिसे सुरक्षा और अपनत्व का केंद्र माना जाता है, वही जब अस्वीकार करता है तो व्यक्ति का अस्तित्व ही प्रश्नों के घेरे में आ जाता है। शृंखला इस पीड़ा को अत्यंत संवेदनशील ढंग से चित्रित करती है। यह दर्शाती है कि किन्नर होना केवल जैविक या शारीरिक भिन्नता नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टि का परिणाम भी है। इस वेब सीरीज का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह किन्नर समुदाय के भीतर मौजूद सामूहिकता और पारिवारिक संरचना को भी उजागर करती है। गुरु-चेला परंपरा, आपसी सहयोग और भावनात्मक जुड़ाव को शृंखला में सकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। यह दर्शाता है कि जब मुख्यधारा का समाज किसी समुदाय को अस्वीकार करता है, तब वह समुदाय अपनी वैकल्पिक सामाजिक संरचनाएँ विकसित करता है। किन्नरों को जिंदा है तब तक तो कोई संबंध नहीं करता पर मरने के बाद भी समाज में उसे स्थान नहीं मिलता नर्गिस वेब सीरीज का एक अहम पात्र आहे असे मरने के बाद अस्पताल वाले उसकी बॉडी को जमीन पर ही फेक देते नर्गिस के सन्मान के लिए गौरी लड़ाई लढती है वो मुन्ना से कहती है-" बात बॉडी की नहीं है बेटा, आज अगर उसे जमीन पर छोड़ दिया तो हम जिंदगी भर उठ नहीं पाएंगे। बराबर जीने का मौका तो दिया नहीं बराबरी से करने का हक मैं लेकर रहूंगी"³

ताली केवल व्यक्तिगत संघर्ष की कथा नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और राजनीतिक चेतना की कहानी भी है। वेब सीरीज में यह स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि पहचान की लड़ाई केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि कानूनी और संवैधानिक भी है। किन्नर समुदाय को “तीसरे लिंग” के रूप में मान्यता दिलाने का संघर्ष, सरकारी तंत्र से टकराव और सामाजिक

आंदोलनों की भूमिका के कारण ताली व्यक्तिगत पीड़ा को सामूहिक आंदोलन से जोड़ती है। गौरी जब सुप्रीम कोर्ट में पिटीशन डालती है और कोर्ट की लंबी कानूनी लड़ाई के बाद समाज में तीसरे लिंग थर्ड जेंडर के रूप में मान्यता मिलती है तब की नवजीवी दिखाई देते हैं इसके पूर्व ना होने कोई सुविधा मिलती थी ना वह जीवित है इसका कोई प्रमाण मिलता था। इस लड़ाई के कारण अंत में वह किन्नरों को स्वाभिमान सम्मान और स्वतंत्रता प्राप्त करती है। सामाजिक प्रभाव की दृष्टि से ताली अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह दर्शकों में केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि समझ और स्वीकार्यता की भावना विकसित करती है। वेब सीरीज देखने के बाद दर्शक किन्नर समुदाय को “अन्य” के रूप में नहीं, बल्कि समाज के समान अधिकारों वाले नागरिक के रूप में देखने के लिए प्रेरित होता है। इस प्रकार, ताली सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने का प्रयास करती है। गौरी के शब्द केवल किन्नरों के लिए ही प्रेरणादायक है, ऐसा नहीं है। वह सभी थके हारे के लिए प्रेरणा की स्रोत बनती हैं। वह ईश्वर से री कहती है-

"तू मुश्किलें दे दे भगवान,

मैं आसान करूं

तू दे दे तपती रेत,

मैं गुलिस्ता करूं

तू पहाड़ बना दे,

जिनमें मैं सुरंग बनू

तुला गिरा दे बिजलिया मुझ पे

मैं तो सतरंग बनू"⁴

निष्कर्ष:

ताली की कथा आत्मसंघर्ष से आरंभ होकर सामाजिक आंदोलन तक की यात्रा को चित्रित करती है। इसमें



किन्नर जीवन की पीड़ा, पारिवारिक अस्वीकृति, सामाजिक अपमान और आर्थिक असुरक्षा को यथार्थवादी ढंग से दर्शाया गया है। साथ ही, यह श्रृंखला साहस, आत्मसम्मान और अधिकारों के लिए निरंतर संघर्ष की भावना को भी मजबूती से सामने लाती है। कथा का प्रवाह दर्शक को भावनात्मक रूप से जोड़ता है और उसे सोचने पर विवश करता है। इस वेब सीरीज की सबसे बड़ी विशेषता इसका संवेदनशील दृष्टिकोण है। किन्नर पात्रों को न तो करुणा का पात्र मात्र बनाया गया है और न ही हास्य का साधन। इसके विपरीत, उन्हें एक जागरूक, संघर्षशील और निर्णय लेने वाले सामाजिक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ताली केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना को जाग्रत करने वाली वेब सीरीज है। यह किन्नरों को मुख्यधारा में लाने का सार्थक प्रयास करती है। ताली भारतीय ओटीटी माध्यमों में किन्नर विमर्श की दिशा में

एक महत्वपूर्ण कदम है। यह वेब सीरीज न केवल प्रतिनिधित्व की राजनीति को चुनौती देती है, बल्कि मीडिया को सामाजिक परिवर्तन के औजार के रूप में भी स्थापित करती है।

संदर्भ :

1. डॉ. कल्पना गवली- किन्नर होने का एहसास और परिवार से विस्थापन की गाथा: मैं पायल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.143
2. ताली वेब सीरीज लिं <https://youtu.be/5fbHINduN4k?si=9d4yaKgIfG89KhBj>
3. वही.
4. वही.